PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 3, ISSUE 5

बालिका गर्भपात (स्त्रीभ्रूणहत्या) : एक जीवीत मनुष्य की हत्या

प्रा. नेहा एम. धारैया
सहाय्यक प्राध्यापक (समाजशात्र)
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज, विजयनगर. साबरकांठा
गुजरात भारत

प्रस्तावनाः

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रामन्ते तत्र देवता: । "इस पंक्ति को तो सभी जानते हैं, लेकिन अगली पंक्ति को बहुत कम लोग जानते हैं। अगली पंक्ति हैं - "यत्रैस्तास्तु न पूज्यते सर्वास्तत्राफला क्रिया: । " अर्थात जहाँ नारी का सम्मान नहीं होता वहाँ विकास की सभी क्रियाएं विफल हो जाती हैं। हजारो वर्ष पहले कही गई यह बात आज के समय में भी प्रासंगिक है। ईश्वर की द्रुष्टि में स्त्री-पुरुष में कोई भेद नहीं है।उसमें भी स्त्री को ईश्वर ने विशेष रूप से प्रेममयी, सेवामायी और करुणामयी बनाया है। संपूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति व पालन की विशेष भूमिका स्त्री ही निभाती है।परंतु वर्तमान समय में स्त्री जाति से अधिक ओर कोई अत्याचार का भोग नहीं बनता।जन्म से पहले गर्भपात व जन्म के बाद अत्याचारपूर्ण व तिरस्कृत जीवन जीने पर विवश कर दिया जाता है।आज के समय में स्त्री भ्रूण-परीक्षण एवं स्त्री भ्रूण-हत्या कन्याओं के लिए अभिशापबन गया है।

गर्भपात (भ्रूणहत्या) का अर्थ :

गर्भपात का शाब्दिक अर्थ," गर्भ का अट्ठाइस सप्ताह से पूर्व समापनकरना " है।

विज्ञान के अनुसार " ओवम के जीने योग्य बनने से पहले अर्थात गर्भ के अठाइसवें हफ्ते के पहले गर्भाशय केसमाप्त होने को गर्भपात कहते हैं। "

प्राचीन काल मे स्त्रीकों देवी या माता का दर्जा दिया जाता था।हमारे वेदों, उपनिषदों एवं रामायण,महाभारत जैसे पौराणीक ग्रंथो मे भी नारी शक्ति की महिमा व्यक्त हुई है । यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रामन्ते तत्र देवता ।इस भावना के साथ भारतवर्ष में सदियो से स्त्री सन्मान का आदर्श व्यक्त हुआ है । हमारे लोकतंत्र बंधारण में भी स्त्री-पुरुष समानता की बात की गई है।

14 और 15 वीं शताब्दी में लड़कियों को दूध के बड़े बर्तन में डूबोकर मरदीया जाता था ।ईसीके साथ ईसी प्रथा से संबंधीत ओर ऐसे अनेकों दूषण समाज में मौजूद थे जैसे कि दहेजप्रथा, सतीप्रथा आदि ।और ईसी कारण लड़कीयों को जन्म के साथ मार दिया जाता था । वर्तमान में समय और संजोग बदल गये हैं, परिस्थितियां भी बदल गई हैं लेकिन लड़कियों के प्रति जो रोष या द्वेष हैं उसमें आज २१वीं सदी में भी कोई बदलाव नहीं आया हैं । आज हमारासमाज सुसंस्कृतता और आधुनिकता की चादर पहने खडा हैं लेकिन उस चादर में लगे थींगड़े के निशान आज भी रह गए है ।पहले तो लड़की के जन्म लेने के बाद उसे मार दिया जाता था, लेकिन आज के आधुनिक व वैज्ञानिक युग में बेटी को जन्म ही दिया नहीं जाता है । अर्थात माता के गर्भ में ही बेटी को मार दिया जाता है । जीसे स्त्री भ्रूण-हत्या कहा जाता है ।

जैसे जैसे हमारा समाज आधुनिक बनता जा रहा है, विज्ञान व टेक्नोलोजी का विकास होता जा रहा है वैसे मानव उसका ज्यादा से ज्यादा दूरूपयोग करता जा रहा है । पहले एसी कोइ टेक्नोलोजीउपलब्ध नहीं थी जिससे ये पता लगाया जा सके कि माता के गर्भ में रहा बालक लड़का हैं या लड़की । इस कारण लड़की के पैदा होने के बाद उसे मार दिया जाता था, लेकिन आज गर्भ-परीक्षण से पैदा होने वाला बालक लड़की हैं यह पता चलने पर उस बालीका के जन्म से पहले माता के गर्भ में ही उसे मारा दिया जाता हैं ।

यह गर्भपात जीवीत मनुष्य की हत्या है । कानून की परिभाषा में गर्भपात कराना बहुत बड़ा अपराध माना गया है ।उसके बावजूद रुपयों की लालच मे आकार कई डॉक्टर्स गर्भ-परीक्षण कर 'जय मातादी या जय श्री कृष्ण' बोलकर आने वाले बालक की जाती बताते हैं ।

कैंची जैसा नुकिला हथियार गर्भ में डालकर उस हथियार से जीवीत बालीका को छेदा जाता है । गर्भ में तड़पती बालीका खून से तरबतर होकर वेदना के साथ मृत्यु के शरण होती है ।उसके बाद एक चमच जैसे ओजार से उस बालीका के टुकड़े बाहर निकाले जाते है । खून से तरबतर अंतरडीया, बाहर निकल आई हुई आंखे, दुनिया में जीसने पहली साँस भी नहीं

लीहो एसे फैफड़े, नन्हे नन्हे हाथ-पाँव और एक नन्हा सा दिल ये सब जल्द ही बाहर निकाल कर डॉकटर उसे नीचे पड़ी हुई बालदी में फेंक देता हैं । उस नन्ही सी बची को माता के गर्भ में मरने के लीये पूरा समय भी नहीं दीया जाता । "अंधेरे में तीर मारने" जैसा यह ऑपरेशान अगर कोई खूनी, डाकू या कसाई देखले तो शायद वे अपना धंधा छोड़ सन्यासी बना जाये ।

देश में गर औरते अपमानित है, नाशाद है, दिल पर रखकर हाथ कहिए, देश क्या आजाद है ?

जिन-का पैदा होना ही अपशकुन है, नापाक है, औरतो की जिंदगी ये जींदगी क्या खाक है ।

बालीका गर्भपात एक जघन्य अपराध है । मातृत्व का अपमान है । स्त्री का मातृत्व उसे ऐसा कृत्य करने से रोकता है, लेकिन उसका परिवार उस स्त्री पर गर्भपात करवाने के लीए दबाव डालते है । कई बार स्त्री को ऐसा भी समजाया जाता है कि **"अभी तो शुरुआत है, उसमे अभी जान नहीं होती, किसी को पता भी नहीं चलेगा।"**ओर भोली स्त्री ऐसी बातो में आजाती है । लेकिन **"कौन कहता है कि गर्भ में जान नहीं होती, जान तो उसमें पहले दिन, पहली क्षण से होती है । अगर उसमें जान नहीं होती तो उसमें एक-दो-तीन ऐसे महीनो का विकास कैसे होता?" इसलिए एक माँ ही अपनी बच्ची को हत्या से बचा सकती है ।**

देश के स्वातंत्र्य होने के बाद भारतीय संविधान में स्त्री-पुरुष समानता स्थापित की गई है । स्त्रीयों को कानूनी अधिकार दिये गए है । अब स्त्रीया आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनी है । इसके बावजूद असंख्य स्त्रीया आज भी हिंसा-अत्याचार का भोग बन रही है । अपमान, जुल्म, अत्याचार से त्रस्त होके कई स्त्रीया आत्महत्या का सहारा लेती है । स्त्रीयों को मारना-कूटना, अपहरण, बलात्कार, जला देना एवं खून के किस्से बढ़ते जा रहे है । पुरुष की तुलना में स्त्रीयों की संख्या कम होती जा रही है । गर्भपात संबंधीत कानून होने के बावजूद आज उस कानून का कोई महत्व नहीं रहा है ।

एक ताजा अहवाल के मुताबीक भारत में आखरी 20 सालो में स्त्री भ्रूण-हत्या की 1 करोड़ से ज्यादा घटनाए बन चुकी है । याने कि आखरी 20 सालों में 1 करोड़ से ज्यादा बच्चीयों को जन्म से पहले ही मौत के घाट उतार दिया गया । आज ऐसी स्थिति उपस्थित हुई है कि पुरुषो की संख्या की तुलना में स्त्रीयों की संख्या कम होती जा रही है ।

भारत में 1000 पूरुषों की तुलना में स्त्रीयों की संख्या :

साल	स्त्रीयों की संख्या		साल	स्त्रीयों की संख्या
1901	972		1961	941
1911	964		1971	930
1921	955		1981	934
1931	950		1991	927
1941	945		2001	933
1951	946		2011	940

इस आंकडे को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आज भ्रूण हत्या का शिकार हो रही हर बेटी मानो यह कह रही है - **कुछ कहना चाहती हूँ, अपने हिस्से का जीवन जीना चाहती हूँ । दुनिया के रंग, दुनिया के संग, मैं भी जीना चाहती हूँ ।।**

स्त्री भ्रूण हत्या के कारण :

1. समाज में महिलाओं की दोयम स्थिति
2. स्त्री की सामाजिक उपेक्षा
3. लिंगभेद का शिकार होना
4. पुत्रजन्म का विशेष महत्व - पुत्र की महत्वकांक्षा
5. पुरुषप्रधान समाजव्यवस्था - पुरुषप्रधान मानसिकता
6. लड़की को एक बोज समाजना
7. दहेजप्रथा
8. प्राचीन मनोवृतियाँ एवं अंधविश्वास

9. अशिक्षा - निरक्षरता

स्त्री भ्रूण हत्या के नकारात्मक परिणाम :

यदि यह स्त्री भ्रूणहत्या की प्रवृति इसी प्रकार चलती रही तो समाज एवं देश को निम्न समस्याए एवं कभी न खत्म होनेवाले भयावह दुष परिणामो का सामना करना पड़ेगा ।

1. स्त्री-पुरुष संख्या मे असानता
2. बच्चो से वंचितता - गर्भ का न ठहरना
3. स्त्रीओं के स्वास्थय पर दूषप्रभाव
4. समय से पूर्व प्रसव होना
5. गर्भ में भ्रूण का कम विकास होना
6. मानसिक तनाव
7. असंतुलित लिंगानुपात
8. सामाजिक संतुलन के बिगड़ने के कारण हजारों युवको का कुँवारा रह जाना
9. बहुपति विवाह का जन्म
10. हरण-विवाह, सेवा-विवाह आदि का प्रचलन
11. वैश्यावृति को प्रोत्साहन
12. समलैंगिकता को बढ़ावा
13. दहेज के स्थान पर वधू-शुल्क का प्रचलन
14. एइड्स जैसी लाइलाज बीमारीयों का जन्म
15. अन्य कई यौन संबंधीत बीमारीयों का जन्म
16. समाज एवं राष्ट्र के विकास पर दूष-प्रभाव

"जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है ।" इस महान धारणा वाले भारतवर्ष में कन्या के जन्म लेने से पूर्व ही लिंग परीक्षण द्वारा गर्भपात करके बालिका की हत्या कर देना यह कोई मानवीय कृत्य नहीं है । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारी बेटी भविष्य मे रानी लक्ष्मीबाई, श्रीमती इंदिरा गांधी, सरोजीनी नायडू, किरण बेदी, सुनीता विलियम्स आदि बन सकती है । हमारे कुल का नाम रोशन कर सकती है । इसीलिए बेटी जन्म को अपनाईए एवं बेटी का सन्मान करे ।

कन्या तो है प्रकृति का सुंदरतम उपहार,

इसी से महकता है घर-संसार

मत करो बालिका जन्म पर प्रहार ।।

संदर्भग्रंथ :

1) डॉ. मंजू गुप्ता, डॉ. सुभाष चन्द्र गुप्ता , भ्रूण -हत्या और महिलायें, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली

2) प्रकाश नारायण नाटाणी, कन्या भ्रूणहत्या और महिलाओ के प्रति घरेलू हिंसा, बुक एनक्लेय, जयपुर

3) डॉ. जे. के. दवे, स्त्रीया और समाज (यह संदर्भग्रंथ गुजराती भाषा में है।), अनडा बुक प्रकाशन

4) इन्टरनेट पर दी गई माहिती का उपयोग